Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Multi-Disciplinary - ISSN : 2279-0268

Continuous Issue - 20 | June – July 2017

प्रेम और विवाह संबंधों की बदली हुई दृष्टि : दूसरा चेहरा

समकालीन कहानी ने विकास की ऊंचाईयाँ प्राप्त की | नए कथाकारों ने अपने अंदर ही घुटते व्यक्ति को निकालकर समाज में लाकर प्रतिष्ठित किया है | विवाह और प्रेम सम्बन्धी नए मूल्य, दाम्पत्य संबंधों में दरार, स्त्री-पुरुष के नैतिक मानों की चुनौती, अनाम संबंधों का दायरा आदि अनछुए विषय पर नये कथाकारों की कलम चलती है | उसमें भी महिला कथाकारों ने हिंदी कहानी की चेतनाभूमि को परिवर्धित करने में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी निभाई है | स्त्रियों की मानसिक गुलामी, सामाजिक गतिरोध, नारी-जीवन के तनाव और संघर्ष आदि तत्वों पर लेखिकाएं अधिक सजग हैं| इनमें नासिरा शर्मा पदचिन्ह हैं | "हिंदी में उनके लेखन की विशिष्टता यह है कि वे भारतीय समाज में अल्पसंख्यकों की स्थिति व विषमताओं को मार्मिक ढंग से व्यक्त करती हैं |"१ उन्होंने कथा-साहित्य द्वारा प्रेम और विवाह संबंधों की बदली हुई दृष्टि को अधिक लक्षित करने की कोशिश की है| कहानी क्षेत्र में 'पत्थर गली', 'संगसार', 'इब्ने मरियम', 'शामी कागज', 'सबीना के चालीस चोर', 'खुदा की वापसी', 'इन्सानी नस्ल', 'बुतखाना', 'दूसरा ताजमहल' जैसे कहानी-संग्रह द्वारा उन्होंने बड़ा नाम कमाया है | "'बुतखाना' सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना और इन्सानी जटिल प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति का दस्तावेज़ है | यह वर्तमान समय की विषमताओं की कहानियों में इस सहजता से पिरोता है कि इंसानी रिश्तों की ललक पात्रों में बाकि ही नहीं रहती, बल्कि टूटते रिश्तों और बदलते मानवीय सरोकारों की कचोट पाठकों को गहरी तपकन का एहसास देती है |"२ 'बुतखाना' में संग्रहित 'दूसरा चेहरा' कहानी अपने नवीन विषय को लेकर बहुचर्चित है | यह कहानी न केवल लेखिका को; पाठक की आत्मा को बेहद संतोष और सुकून देती है |

इस कहानी में नायिका द्वारा एक आदमी का दूसरा चेहरा परिचित हुआ है, ऐसा चेहरा जो नायिका के भीतर को हचमचा देनेवाला साबित है | कहानी के प्रारम्भ में उस चेहरे का परिचय देते हुए नायिका कहती है कि उससे मिले माहभर हुआ था, लेकिन हजार वर्षों से उसके साथ रहती आई हो ऐसा लगता था | वह अनुभूति कर रही थी कि "हम कई जन्मों से इसी तरह धरती पर आये और एक दूसरे के संग जी कर हमने अपनी आँखें मूंद मौत के बहाने कुछ देर आराम किया और फिर नए चेहरे के संग पुरानी आत्माओं से लेस हम इस नश्वर संसार में विचरने आ गये |"३ उस चेहरे के साथ व्यतित मिलनावस्था की अनुभूति विशिष्ट थी | उनके अहसास में जल तरंग बजता था, आँखों के सामने सतरंगी आभा हमेशा नाचती थी | इस सिलसिले एक वर्ष गुजर जाने के बाद नायिका विवाह के बंधन में बांध जाना उचित समझने लगी | उसके घर वाले भी शादी के लिए बार-बार जिक्र करते थे | वह अपने सम्बन्ध को कोई नाम देना चाहती थी | एक दिन उसने विवाह को लेकर पूछा तो उत्तर मिला कि "आप शायद भूल रही हैं कि मैं एक अदद पत्नी का पति हूँ |"४ वह आगे भी कहता रहा कि मैं तुम्हें समय दे सकता हूँ, तुम्हारा ख्याल कर सकता हूँ लेकिन प्रेम नहीं करता हूँ | इस प्रकार मुद्दे ने रंग पकड़ा तो वह आदमी बड़ा दर्शन बघारने लगा| जिससे नायिका के सामने उसका दूसरा चेहरा उभरा |

नासिरा शर्मा ने इस कहानी द्वारा युवा पीढ़ी को स्त्री-पुरुष के विशिष्ट सम्बन्ध को लेकर सावधान करने की कोशिश की है | विज्ञान की प्रगति के कारण मानव-जीवन में पर्याप्त परिवर्तन आया है |

सामाजिक-धार्मिक-आध्यात्मिक मूल्यों का नाश होने लगा है | जीवन में भौतिक सुख-सुविधाओं का महत्व बढ़ने लगा है | फलस्वरूप स्वार्थपरकता के बढ़ते व्यक्ति में नैतिक दृष्टि से बड़ी गिरावट देखने मिलती है | हमने नायिका की अनुभूति से गुजरते हुए पाया कि वह दूसरा चेहरा नायिका पर जादूगरी मुस्कान फेंकता रहता | जब नायिका उससे मिलने उसके शहर फैज़ाबाद जाती तो वह उसके साथ होटल में इस तरह ठहरता कि स्वयं होटल वाले समझने लगे थे कि वे पति-पत्नी हैं | उसकी जादूगरी भी कमाल की | आफ़िस से "लंच में वह एक चक्कर घर का लगा लेता और कपड़े बदल दोपहर का खाना वहां खा लेता ताकि घर वालों को इस बात का यकीन हो जाए कि वह शहर से दूर काम के सिलसिले से जाता है और वहीं टिक जाता..."५ नायिका धरती पर चलने लगी तो पता चला कि वह पूर्णत: ब्लैकमेलर था | बार-बार कहता रहता था कि उसका अपनी पत्नी से पहले से कोई लगाव नहीं है, वह शादी भी उसकी मर्जी से नहीं हुई आदि | भावात्मक स्तर से गुजरते नायिका अनुभव करती कि हमारा सम्बन्ध जल्द ही पति-पत्नी के धागे में बांध जायेगा | उसका व्यवहार देखकर नायिका इतनी संतुष्ट हो गई थी कि उसने अपने पुराने रिश्ते जीना ही बंद कर दिया था | उसके अपने शहर में लोग उसे ढूंढते थे जबकि वह स्वयं फैज़ाबाद पहुँच जाती थी | बाद में तो वह हर छुट्टी के दिन जयपुर से फैज़ाबाद पहुँच जाती थी |

दरअसल नायिका नौकरीशुदा थी और उसकी तनख्वाह का आधे से ज्यादा हिस्सा उस आदमी के साथ घुमने-फिरने में खर्च हो जाता था | इतना ही नहीं; कुछ रूपये तो उस आदमी की जेब में जबदस्ती डालने पड़ते थे | वह कहती है, "महँगे उपहार जैसे गर्मसूट, जूते, लाईटर और न जाने क्या-क्या छोटी-बड़ी चीजें मैंने उसको देना शुरू कर दी थीं ताकि उसको यह अहसास न जगे कि वह बेकार है और मैं कमा रही हूँ |"६ उसकी जरूरत के चलते कभी-कभी तो दस-बीस हजार भी देने पड़ते थे | इसलिए नायिका चाहती थी कि जो पैसा घुमने-फिरने में खर्च होता है, क्यों न विवाह के बंधन में बांध जाने पर उसके अपने घर में खर्च करें !

अंत में तराजू उठाकर सोचती है तो कुछ भी हाथ नहीं लगता | नायिका ने पहली बार समझने की कोशिश की तो उसका दूसरा (असली) चेहरा ज्यादा समझ में आने लगा | कहानीकार का कहना है कि जिसमें सिर्फ अपना पैसा, टाइम और इज्जत लग रहे हो, बदले में अपेक्षित कुछ भी न मिले उसकी महबूबा बनकर जीना बेकार है| अत: हर इन्सान को प्यार में अक्ल को भी सामिल करना चाहिए | वास्तव में "मर्द जब सम्बन्ध बनाता है तो उसकी ज़िन्दगी का एक अलग हिस्सा होता है, मगर जब औरत सम्बन्ध बनाती है तो उसमें वह अपनी पूरी ज़िन्दगी को देखती है |"७

'दूसरा चेहरा' कहानी संकेत करती है कि घर की चारदीवारी को भूलकर किसी बुलावे के कैदखाने में जकड़ जाना भविष्य के लिए अच्छा नहीं है | नायिका ने वही किया | अपने परिवार से रिश्ता काटकर उस चेहरे से रिश्ता जीना शुरू किया | इतना ही नहीं; उसने उस चेहरे पर खर्च करना शुरू किया | यहाँ तक कि दिल, दिमाग, जिस्म, धन, कीमती चीजें और सबसे बड़ी चीज इज्जत भी उसके पास जमा कर दिया था | हमें इस तरह किसी आदमी के पीछे, जिससे हम पूर्णत: अनजान हैं, अपना बैंक खाली कर देना वाज़िब नहीं है | नायिका के इस सम्बन्ध को सारा फैज़ाबाद जानता था और समयांतर यह बात अपने शहर भी घुमती-फिरती पहुंची थी| उसके शुभचिंतक तलखी से पूछते भी थे कि क्या बदनाम होना ही तुम्हारा लक्ष्य हो गया है ? लेकिन नायिका उस वक्त अपने आपको संभल नहीं पाई थी | जब सारा लूट जाने के बाद पता चला कि वह तो निरा लम्पट है | कई लडकियों से उसके इस प्रकार के सम्बन्ध थे और है भी; नायिका के पैरों तले से जमीन खिसकने लगी, उसके दु:ख का पार न रहा |

अंतिम बार दशहरे की छुट्टियों में बौराकर नहीं; कुछ जांचने-परखने, टोह लेने के इरादे से वह उसके पास गई और अपने सम्बन्ध को कोई नाम देने का प्रस्ताव रखा | यदि प्रेम होता तो जरुर वह नायिका के प्रस्ताव का स्वीकार करता, समाज की नजर में उसे सम्मान देता | लेकिन ऐसा कुछ था ही नहीं ! उसने एक दिन नायिका की मांग में सिंदूर भरा था | मगर उस रीति से नहीं, जो समाज मानता है; बल्कि मजाक में मांग भरी थी | वह यह नहीं सोचता कि बिना विवाह के सिंदूर भर कर फिरती औरत को दुनिया नहीं स्वीकार करती | ऊपर से दर्शन बघारने लगता है | कहता है कि मर्द औरत की मांग एक बार भरता है | वह नायिका को स्वतंत्रता का अर्थ समझाता है | कहता है, "एक तरफ सारे बंधन तोड़कर सारी मर्यादा भूलकर मुझसे खुलेआम मेरे ही शहर मुझसे मिलने आती रही | मेरी संवेदनाओं से खेलती रही यह जानकर कि मैं विवाहित हूँ तो भी तुम मेरे साथ एक कमरे में सोती रही और अब तुम मेरा शोषण करना चाहती हो ? ब्लेकमेल करना चाह रही हो ? मैं अपने विवाहित जीवन से खुश नहीं हूँ, मगर मैं उसको तलाक देने के हक में नहीं हूँ | तुमने कैसे सोच लिया कि मैं तुमसे विवाह करूंगा ?... मैं बेकार हूँ, विवाहित हूँ, चरित्रहीन हूँ आखिर तुम अकेली सुकन्या तो नहीं जिसने मुझसे सम्बन्ध स्थापित किये हैं | कुछ दिन वे लडकियाँ मेरे साथ रहीं फिर शादी तय हुई और मैंने उनको ब्याह दिया | आज भी मिलती हैं और जिस रंग जिस रूप में मिलना चाहती हैं मैं मिलता हूँ, क्योंकि मैं सम्बन्ध के इकहरेपन पर विश्वास नहीं करता हूँ न उन्हें भूलने पर |"८ यहाँ हम पाते हैं कि मूल्य संक्रमण के इस युग में स्त्री-पुरुष के संबंधों को लेकर अनेक परम्परागत मूल्य टूट गये हैं, वहीं अनेक मूल्यों के रूप भी बदल गया है| संघर्ष एक ऐसा ही मूल्य है जिसमें नवीन अर्थछायाओं का अंतर्भाव हो गया है | आज पति अपने सुख-सुविधा के लिए अपनी पत्नी को अँधेरे में रखने से या विवाहित पुरुष किसी लडकी से सम्बन्ध रखने से हिचकिचाता नहीं है | स्त्री-पुरुष संबंधों के बीच आज कुछ सम्बन्ध ऐसे भी हैं, जिन्हें सामाजिक संबंधों की परिभाषा में रखा ही नहीं जा सकता, न वे प्रेमी-प्रेमिका होते हैं, न पति-पत्नी, न भाई-बहन अथवा और कुछ | इन जिये जा रहे अनाम संबंधों को समाज मान्य करता है ? हम ऐसे रिश्तों के पक्ष में या विपक्ष में ? वास्तव में आज स्त्री-पुरुष अपनी हालत पर मिलते रहते हैं| कोई किसी को अपनी आवश्यकता पर तन-मन देता है तो कोई तन-मन और धन| इसमें कोई किसी के साथ दगा नहीं कर रहा | हर आदमी का मानवीय रिश्तों का अपना एक दर्शन है, जिसकी दस्तावेज़ पर कई नाम चमकते रहते हैं | आज-कल बिना रिश्ते का सम्बन्ध और बिना प्रेम की मित्रता की हवा चल रही है | सिर्फ इतना कि ऐसा सम्बन्ध परम्परागत सांचे में फिट नहीं बैठता |

कुलमिलाकर 'दूसरा चेहरा' कहानी में स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध के विशिष्ट स्तर को अत्यंत सूक्ष्मता और प्रामाणिकता से सशक्त अभिव्यक्ति मिली है | यहाँ अनाम भावना, अनछुए प्रसंग को जिस रूप में वाणी मिली है, वह हिंदी कहानी की बहुत बड़ी उपलब्धि है | विवाह और प्रेम सम्बन्धी नए मूल्यों को प्रकाशित करने वाली यह कहानी विवाह संस्था पर करारी चोट भी करती है | भावनात्मक और संवेदनात्मक स्तर पर नायिका के मानसिक संघर्ष की प्रस्तुति भी लाजवाब है | कहानी में निरुपित समस्या से वर्तमान समाज ग्रस्त है | अत: यह कहानी समस्याग्रस्त आदमी को अपनी दशा पर सोचने और उचित दिशा पर चलने का पथ प्रदर्शित करती है |

सन्दर्भ

I. ममता कालिया (सं.), नयी सदी की पहचान : श्रेष्ठ महिला कथाकार, पृ. १४१
II. नासिरा शर्मा, बुतख़ाना, फ्लैप से
III. वही, पृ. ९२
IV. वही, पृ. ९५

V. वही, पृ. ९२
VI. वही, पृ. ९३
VII. वही, पृ. ९७
VIII. वही, पृ. ९६-९७

****

डॉ. सोमाभाई जी. पटेल
हिंदी विभाग
नीमा गर्ल्स आर्ट्स कोलेज

Copyright © 2012 - 2017 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat